श्रीयंत्र पूजा के पहले कुछ सामान्य नियमों का जरूर पालन करें -

- ब्रह्मचर्य का पालन करें और ऐसा करने का प्रचार न करें।
- साफकपडे पहनें।
- सुगंधित तेल, परफ्यूम, इत्र न लगाएं।
- बिना नमक का आहार लें।
- प्राण-प्रतिष्ठित श्रीयंत्र की ही पूजा करें। यह किसी भी मंदिर, योग्य और सिद्ध ब्राह्मण, ज्योतिष या तंत्र विशेषज्ञ से प्राप्त करें।
- यह पूजा लोभ के भाव से न कर सुख और शांति के भाव से करें।
- इसके बाद श्रीयंत्र पूजा की इस विधि से करें। किसी विद्वान ब्राह्मण से कराया जाना बेहतर तरीका है -
- शक्रवार या किसी भी दिन सुबह स्नान कर एक थाली में श्रीयंत्र स्थापित करें।
- इस श्रीयंत्र को लाल कपडे पर रखें।
- श्रीयंत्र का पंचामृत यानि दुध, दही, शहद, घी और शक्कर को मिलाकर स्नान कराएं। पवित्र गंगाजल से स्नान कराएं।
- इसके बाद श्रीयंत्र की पूजा लाल चंदन, लाल फूल, अबीर, मेंहदी, रोली, अक्षत, लाल दुपट्टा चढाएं। मिठाई का भोग लगाएं।
- धूप, दीप, कर्पूर से आरती करें।
- श्री यंत्र के सामने लक्ष्मी मंत्र, श्रीसूक्त, दुर्गा सप्तशती या देवी का कोई भी आसान श्लोक का पाठ करें। यह पाठ लालच से दूर होकर श्रद्धा और पूरी आस्था के साथ करें।
- अंत में पूजा में जाने-अनजाने हुई गलती के लिए क्षमा मांगे और माता लक्ष्मी का स्मरण कर सुख, सौभाग्य और समृद्धि की कामना करें।
- श्रीयंत्र पूजा की यह आसान विधि नवरात्रि में बहुत ही शुभ फलदायी मानी जाती है। इससे नौकरीपेशा से लेकर बिजनेसमेन तक धन का अभाव नहीं देखते। इसे प्रति शुक्रवार या नियमित करने पर जीवन में आर्थिक कष्टों का सामना नहीं करना पडता।

इस तरह का किचन वास्तुशास्त्र के अनुसार अच्छा माना जाता है

वास्तुशास्त्र के अनुसार घर का किचन दक्षिण-पूर्व दिशा में बनाना सर्वोत्तम माना जाता है। यदि ऐसा ना हो सके तो किचन को पूर्व दिशा में भी बनाया जा सकता है। दक्षिण-पश्चिम दिशा या उत्तर-पश्चिम दिशा में किचन बनाना वास्तुशास्त्र की दृष्टी से अच्छा नही माना जाता है।

किचन में खाना बानाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले उपकरण जैसे- स्टोव, चूल्हा, बर्नर या ओवन आदि पूर्व दिशा में होना चाहिए।

घर में भोजन पकाने का स्थान (प्लेटफार्म) पूर्व दिशा में दीवार के सहारे बनाना चाहिए ताकि खाना बनाते समय, खाना बनाने वाले का मुख पूर्व की ओर हो। यह वास्तुशास्त्र के अनुसार अच्छा माना जाता है।

किचन में पीने का पानी, नल की टोटी एवं वाश- बेसिन उत्तर-पूर्व दिशा में और फ्रिज पश्चिम दिशा में रखना उचित होता है।

घर में किचन का मुख्य द्वार भोजन बनाने वाली के ठीक पीछे नहीं होना चाहिए यह वास्तुशास्त्र की दृष्टी से उत्तम नही होता है।

किचन में चूल्हे (गैस) एवं पानी रखने के स्थान के बीच उचित दूरी रखें तथा किचन में टूटे-फूटे बर्तन ना रखें।

किचन से थोडी दूरी पर ही डाईनिंग टेबल रखा जाता है जहां घर के सभी लोग भोजन करते हैं। डाईनिंग टेबल टेबर गोल या अंडे के अकार का नही होना चाहिए।

जिस घर में यह नारियल होता है वहां महालक्ष्मी की विशेष कृपा प्राप्त होती है

तंत्र पूजा में नारियल को ऊपर से तोड़कर उसके अंदर घी डाला जाता है। फिर इसे अग्नि को समर्पित किया जाता है। यह प्रक्रिया भी बलि का ही प्रतीक है। हम लोग मंदिरों में नारियल फोडते हैं। नारियल फोडना और फेडने का एक तरीका होता है, एक ही बार में टूटना चाहिए। फोडने के पहले कुछ लोग उसके ऊपर सिंदूर चढाते हैं, तो कुछ नहीं चढाते हैं। नारियल फोडना एक सिद्धांत के बराबर मान लिया गया है। कुछ लोगों को यह पसंद है, तो कुछ लोगों को नहीं पसंद।

पहले जमाने में लोग पशुओं की बलि देते थे। अब ऐसा नहीं होता है। पशुओं के अधिकारों की रक्षा की जाती है। हम अहिंसा चाहते हैं, पर नारियल फोडना बलि का सूचक है। कुछ लोग मानते हैं कि यह प्रतीक है हमारे अहंकार को तोडने का। वहीं दूसरी ओर कुछ लोग मानते हैं कि नारियल फोडते ही अंदर से पानी निकलता है। नारियल के पानी को आत्मा से जोडकर देखा जाता है। हमें उसके ऊपर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इसका मतलब यह है कि शब्दार्थ को न देखें, भावार्थ को देखें। दक्षिण भारत में केवल नारियल ही नहीं फोडते हैं, कद्दू भी काटते हैं। बलि के तौर पर। तंत्र पूजा में नारियल को ऊपर से तोडकर उसके अंदर घी डाला जाता है। फिर इसे अग्नि को समर्पित किया जाता है। यह प्रक्रिया भी बलि का ही प्रतीक है।

भारतीय संस्कृति धार्मिक मान्याताओं से भरी पड़ी है। आपको ऐसी कई मान्यताओं व नियम के बारे में जानकारी होगी कि यह सिर्फ पुरुष कर सकते हैं या फिर महिला। इसी तर्ज पर हम आपको बताने जा रहे हैं कि आखिरकार महिलाएं नारियल क्यों नहीं फोड़ती हैं। अगर आपको गाड़ी, बंगला और बीवी चाहिए तो आप नारियल की पूजा करके आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। देश परंपराओं और कहानियों का देश है। यहां की हर परंपरा किसी ना किसी कहानी से जुडी हुई है। कोई भी पूजा बिना नारियल के पूरी नहीं होती है। यदि महिला पूजन कर रही है तो उसे नारियल तोडने के लिए पुरुष का ही सहारा लेना पडता है। नारियल न सिर्फ पूजन बल्कि जीवन के लिए भी रामबाण है

यह है मान्यता

हिंदू धर्म में नारियल को श्रीफल के नाम से भी जाना जाता है ऐसी मान्यता है कि जब भगवान विष्णु ने धरती पर अवतार लिया तो वे अपने साथ तीन चीजें लक्ष्मी, नारियल का वृक्ष तथा कामधेनु लेकर आए थे। इसलिए नारियल के वृक्ष को श्रीफल भी कहा जाता है। श्री का अर्थ है लक्ष्मी अर्थात नारियल लक्ष्मी व विष्णु का फल।

वेदों के जानकार के अनुसार नारियल में त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु और महेश का वास माना गया है। श्रीफल भगवान शिव का परम प्रिय फल है। मान्यता अनुसार नारियल में बनी तीन आंखों को त्रिनेत्र के रूप में देखा जाता है। श्रीफल खाने से शारीरिक दुर्बलता दूर होती है। इष्ट को नारियल चढाने से धन संबंधी समस्याऐं दूर हो जाती है।

बलिदान का दिया गया है स्वरूप

पूजन में नारियल का महत्वपूर्ण स्थान है। कोई भी वैदिक या दैविक पूजन प्रणाली नारियल के बलिदान के बिना अधूरी मानी जाती है। यह भी एक तथ्य है कि महिलाएं नारियल नहीं फोडतीं। श्रीफल बीज रूप है, इसलिए इसे उत्पादन अर्थात प्रजनन का कारक माना जाता है। श्रीफल को प्रजनन क्षमता से जोड़ा गया है। स्त्रियों बीज रूप से ही शिशु को जन्म देती हैं और इसलिए नारी के लिए बीज रूपी नारियल को फोडना अशुभ माना गया है। देवी-देवताओं को श्रीफल चढाने के बाद पुरुष ही इसे फोडते हैं।

शगुन में माना जाता है शुभ

नारियल के जल से शिवलिंग पर रुद्रभिषेक करने का शास्त्रीय विधान भी है। श्रीफल शुभ, समृद्धि, सम्मान, उन्नति और सौभाग्य का सूचक माना जाता है। किसी को सम्मान देने के लिए श्रीफल भी भेंट किया जाता है। सामाजिक रीति-रिवाजों में भी शुभ शगुन के तौर पर नारियल भेंट करने की परंपरा युगों से चली आ रही है। तिलक, विवाह, विदाई, के समय श्रीफल भेंट किया जाता है। यहां तक की अंतिम संस्कार के समय भी चिता के साथ नारियल जलाए जाते हैं। वैदिक अनुष्ठानों में कर्मकांड में सूखे नारियल को वेदी में होम किया जाता है।

कैलोरी से सराबोर है श्रीफल

नारियल कैलौरी से भरपूर होता है। इसकी तासीर ठंडी होती है। इसमें अनेक पोषक तत्व होते हैं। सोते समय नारियल पानी पीने से नाड़ी संस्थान को बल मिलता है तथा नींद अच्छी आती है। इसके पानी में पोटेशियम और क्लोरीन होता है जो मां के दूध के समान होता है। जिन शिशुओं को दूध नहीं पचता उन्हें दूध के साथ नारियल पानी मिलाकर पिलाना चाहिए। डि-हाइड्रेशन होने पर नारियल पानी में नीबू मिलाकर पिया जाता है। मिश्री संग खाने से गर्भवती स्त्री की शारीरिक दुर्बलता दूर होती है तथा बच्चा सुन्दर होता है।

एकाक्षी नारियल करता है मालामाल

जानकारों की मानें तो एकांक्षी नारियल बहुत ही दुर्लभ है। आमतौर पर नारियल की जटा की नीचे दो बिंदू होते हैं, लेकिन एकाक्षी नारियल में यहां सिर्फएक ही बिंदू होता है। यह एक बिंदू वाला नारियल बहुत चमत्कारी होता है। जिस घर में यह नारियल होता है वहां महालक्ष्मी की विशेष कृपा प्राप्त होती है और पैसों की समस्याएं समाप्त हो जाती हैं। इस नारियल के प्रभाव से घर से वास्तु दोष भी नष्ट होते हैं और परिवार के सदस्यों को कार्यों में सफलता मिलती है।

भारतीय संस्कृति में मकर संक्रांति आपसी मन-मुटाव को तिलांजलि देकर प्रेम बढ़ाने हेतु मनाई जाती है। इस दिन की आने वाली धार्मिक कृतियों के कारण जीवों में प्रेमभाव बढ़ने में और नकारात्मक दृष्टिकोण से सकारात्मक दृष्टिकोण की ओर जाने में सहायता मिलती है। इस निमित्त पाठकों के लिए ईश्वर से प्राप्त मकर संक्रांति की जानकारी दे रहे हैं।

मकर संक्रांति

कर्क संक्रांति से मकर संक्रांति तक के काल को दक्षिणायन कहते हैं। सूर्य के दक्षिणायन आरंभ होने को ही ब्रह्मांड की सूर्य नाड़ी कार्यरत होना कहते हैं। ब्रह्मांड की सूर्य नाड़ी कार्यरत होने से सूर्य के दक्षिणायन में ब्रह्मांड में विद्यमान रज-तमात्मक तरंगों की मात्रा अधिक होती है। मकर संक्रांति के दिन सूर्य का उत्तरायन आरंभ होता है। सूर्य के उत्तरायन आरंभ होने को ही ब्रह्मांड की चंद्र नाड़ी कार्यरत होना कहते हैं। ब्रह्मांड की

चंद्र नाड़ी कार्यरत हो जाने से सूर्य के उत्तरायन में ब्रह्मांड में विद्यमान रज-सत्तवात्मक तरंगों की मात्रा अधिक होती है। इस कारण यह काल साधना करने वालों के लिए पोषक होता है। ब्रह्मांड की चंद्र नाड़ी कार्यरत होने से इस काल में वातावरण भी सदा की तुलना में अधिक शीतल होता है। इस काल में तिल भक्षण अधिक लाभदायक होता है। तिल के तेल में सत्व-रिंगें ग्रहण करने की क्षमता अधिक होती है। इसके अतिरिक्त तिल भक्षण से शरीर की चंद्र नाड़ी कार्यरत होती है। इससे जीव वातावरण से तुरंत समन्वय साध सकता है, क्योंकि इस समय ब्रह्मांड की भी चंद्र नाड़ी ही कार्यरत होती है। जीव के शरीर का वातावरण व ब्रह्मांड का वातावरण एक हो जाने से साधना करते समय जीव के सामने किसी भी प्रकार की अड़चन नहीं आती।

साधना की दृष्टि से महत्व

मकर संक्रांति के दिन सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक वातावरण में अधिक मात्रा में चैतन्य होता है। साधना करने वाले जीव को इसका सर्वाधिक लाभ होता है। इस चैतन्य के कारण जीव में विद्यमान तेज तत्व के बढ़ने में सहायता मिलती है। इस दिन रज-तम की अपेक्षा सात्विकता बढ़ाने एवं उसका लाभ उठाने का प्रत्येक जीव प्रयास करे। मकर संक्रांति का दिन साधना के लिए अनुकूल है। इसलिए इस काल में अधिक से अधिक साधना कर ईश्वर एवं गुरु से चैतन्य प्राप्त करने का प्रयास करें। (संदर्भ : सनातन संस्था द्वारा प्रकाशित ग्रंथ-त्योहार धार्मिक उत्सव व व्रत)।

दान एवं पुण्यकर्म फलदायी

सूर्य जिस दिन मकर राशि में प्रवेश करता है, वह दिन ही मकर संक्रांति है। मकर संक्रांति से उत्तरायन आरंभ होता है। उत्तरायन के छ: माह उत्तम होते हैं। मकर संक्रांति से रथसप्तमी तक का काल पर्व काल होता है। इस पर्व काल में दान एवं पुण्य कर्म विशेष फलदायी होते हैं।

संक्रांति में तीर्थ-स्नान

सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक पुण्यकाल होता है। मकर संक्रांति के काल में तीर्थ-स्नान का विशेष महत्व है। गंगा, यमुना, गोदावरी, कृष्णा व कावेरी नदियों के तीर पर बसे क्षेत्रों में स्नान करने से महापुण्य का लाभ मिलता है। मकर संक्रांति के समय तीर्थ क्षेत्रों में लाखों लोगों की भीड़ होती है। संक्रांति देवी जिसे स्वीकार करती हैं, उसके पापों का नाश होता है। इस दिन तिल का तेल व उबटन शरीर पर लगाना, तिल मिश्रित जल से स्नान, तिल मिश्रित पानी पीना, तिल होम, तिल का दान, इन छ: पद्धतियों से तिल का उपयोग करने वालों के सर्व पाप नष्ट होते हैं। संक्रांति के पर्वकाल में दांत मांजना, कठोर बोलना, वृक्ष व घास काटना तथा कामविषय सेवन जैसे कृत्य वर्ज्य करें। नए बर्तन, वस्त्र, अन्ना, तिल, तिलपात्र, गुड़, गाय, घोड़ा, सुवर्ण व भूमि का दान यथाशक्ति करें। इस दिन सुहागिनें दान करती हैं। कुछ पदार्थ सुहागिनें कुमारिकाओं से लूटती हैं व उसके उपरांत उन्हें तिल-गुड़ देती हैं। (संदर्भ : सनातन संस्था द्वारा प्रकाशित ग्रंथ-त्योहार धार्मिक उत्सव व व्रत)।

'तमसो मा ज्योतिर्गमय'

भारत के अनेक पर्वों और त्योहारों में मकर संक्रांति की अपनी अलग एक पहचान है। वर्ष में यही एकमात्र पर्व है, जो 'सौर पंचांग' के आधार पर मनाया जाता है। सूर्य जब अपनी परिक्रमा के बीच धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करता है, तो मकर संक्रांति होती है। दो राशियों के संक्रमण के साथ ही इस दिन को दो ऋतुओं (शिशिर और बसंत) का संधिकाल भी माना जाता है। शीत पर धूप की विजय के रूप में मनाया जाने वाला मकर संक्रांति का पर्व, प्राय: पौष (पूस) मास में पड़ता है, जबकि पूस को खरमास मानने के कारण, इस महीने में और कोई पर्व या त्योहार नहीं पड़ता।

आज के दिन से ही सूर्य का उत्तरायन काल आरंभ होता है, जिससे दिन के परिणाम में वृद्धि होती है और रात घटने लगती है। अब चूंकि सूर्य द्वारा यह राशि परिवर्तन 14 जनवरी को ही होता है, इसलिए मकर संक्रांति प्रतिवर्ष 14 जनवरी को मनाई जाती है। इस वर्ष मकर संक्रांति 15 जनवरी को मनाई जाएगी।

उत्तर भारत के लोग आपसी मेल-मिलाप के इस पर्व को जहां खिचड़ी के नाम से पुकारते हैं, वहीं दक्षिण भारत में इसे पोंगल के नाम से जाना जाता है। इस पर्व में गन्नो और चावल बांटे जाते हैं। इस दिन तुलादान का विशेष महत्व है; किसी व्यक्ति के जितना तौलकर खिचड़ी, घी, तिल व फल इत्यादि दान इसमें दिया जाता है।

'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अंधकार से प्रकाश की ओर प्रयाण करने की वैदिक ऋषियों की प्रार्थना इस दिन के संकल्पित प्रयत्नों की परंपरा से साकार होती है। कर्मयोगी सूर्य इस दिन अपने क्षणिक प्रमाद को अलग रखकर, अंधकार पर आक्रमण करने का दृढ़ संकल्प करता है। इसी दिन से अंधकार धीरे-धीरे घटता जाता है। अच्छे काम करने के शुभ दिनों का प्रारंभ होता है।

धार्मिक लोग कामना करते हैं, कि मकर संक्रांति के बाद ही उनकी मृत्यु हो। जिस व्यक्ति की उत्तरायन में मृत्यु होती है, उसकी अपेक्षा दक्षिणायन में मृत्यु को प्राप्त व्यक्ति के लिए, दक्षिण (यम) लोक में जाने की संभावना अधिक होती है। यमराज को मृत्यु को उत्तरायन प्रारंभ होने तक रोकने वाले इच्छामरणी भीष्म पितामह इस बात का ज्वलंत उदाहरण हैं।

मकर संक्रांति यानी प्रकाश की अंधकार पर विजय। मानव का जीवन भी प्रकाश और अंधकार से घिरा हुआ है; उसके जीवन का वस्त्र काले व सफेद तंतुओं से बना हुआ है। मकर संक्रांति के दिन मानव को संक्रमण करने का शुभ संकल्प करना है। मानव-जीवन में व्याप्त अज्ञान, देह अंधश्रद्ध, जड़ता, कुसंस्कार आदि अंधकार से अंधश्रद्धा को सम्यक् श्रद्धा से, जड़ता को चेतना से और कुसंस्कारों को संस्कारसर्जन द्वारा दूर हटाना है। यही उसके जीवन की सच्ची संक्रांति कहलाएगी।

वास्तु से चुनें भूमि

आवास मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकता है। जिस जमीन पर मकान बनाया जा रहा है, यदि वह वास्तुनुरूप हो तो मकान शुभ होता है और उसमें रहने वाले लोगों को सम्मान, प्रतिष्ठा, आर्थिक उन्नति व पारिवारिक सुख प्राप्त होता है।

केवल भूमि खरीदकर उस पर कोणीय (आठों दिशाओं) संरचना के आधार पर भवन निर्माण ही काफी नहीं है। सर्वप्रथम भूखंड का चयन वास्तुनुरूप होना चाहिए। ऐसी भूमि, जो उपजाऊ, निर्मल, साफ, समतल व छिद्र रहित हो। जहां ठहरने पर प्रसन्नता हो, वह भूमि भवन निर्माण के लिए सर्वोत्तम मानी गई है, जबकि पानी के बहाव से कटी हुई, श्मशान के पास स्थित, दीमक की बांबी या चूहे और सांप के बिल वाली भूमि और ऊबड़-खाबड़ भूमि भवन निर्माण के लिए त्याज्य मानी गई है। वास्तु के अनुसार भवन का निर्माण वर्गाकार भूमि पर करना चाहिए क्योंकि यह सर्वोत्तम होती है और रहने वाले लोगों को संपन्नता व प्रसन्नता प्रदान करती है।

आयताकार भूमि में स्वास्थ्य, धनलाभ और संपन्नता मिलती है। त्रिकोणाकार भूमि में निवास करने पर मुकदमे और उलझनें उत्पन्न होती हैं। गोलाकार या वृत्ताकार भूमि निरंतर समस्याएं देने वाली होती है।

पांच कोण, छह कोण या अन्य आकार की जमीनें मानसिक उद्वेगों के साथ अस्थिरताएं और असंतोष प्रदान करने वाली होती हैं। इसमें भी कर्मों के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्णों के अनुसार निवास हेतु अलग अलग प्रकार के भूखंड वास्तुशास्त्र में निर्धारित किए गए हैं।

सामान्यत: भूमि चार प्रकार की होती है, जिसका ज्ञान विभिन्न प्रकार के परीक्षणों द्वारा किया जा सकता है। इसमें सफेद रंग के मधुर स्वाद वाली और सुगंधित रंग की भूमि ब्राह्मणी भूमि कहलाती है, जो सुखदायक होती है।

लाल रंग के कसैले स्वाद वाली, रक्त के गंध वाली क्षत्रिय भूमि कहलाती है, जो राज्य सुख प्रदान करती है। हरे और पीले रंग की खट्टे स्वाद की, शहद की सुगंध वाली भूमि शूद्रा कहलाती है। यह भूमि सभी प्रकार के निर्माण में त्यागने योग्य होती है। इसके अलावा भी वास्तु शास्त्र के सिद्धांतों में भवन के आयाम, शल्य शोधन भूखंड की दिशा-विदिशा, गुण दोष के साथ भूखंड और भवन स्वामी की तात्कालिक ग्रह स्थिति पर भी विचार किया जाता है और तदनुरूप भूमि खरीदने की सलाह दी जाती है।

सपने बताएँ आपकी जिंदगी

आधुनिक विज्ञान का यह मानना है कि मनुष्य अपनी अधूरी इच्छाओं को अपने सपनों में पूरा करता है जबकि ज्योतिष-शास्त्र का यह कहना है कि सपने मनुष्य को भविष्य की घटनाओं का संकेत देते हैं। जिस प्रकार पशु-पक्षी बाढ़, भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं को पहले से ही भाँप जाते हैं ठीक वैसे ही मनुष्य द्वारा रात्रि के अंतिम पहर में देखे गए स्वप्न भविष्य की घटनाओं का संकेत देते हैं। बस जरूरत है उन सपनों को ठीक ढंग से समझने की।

- स्वप्न में किसी स्त्री को बाल धोते हुए अथवा संवारते हुए देखना शीघ्र ही किसी तीर्थ स्थल की यात्रा का सूचक होता है। लेकिन स्वयं कंघी करना शरीर में किसी चोट की सूचना देता है।
- स्वप्न में किसी सुंदर स्त्री या पुरुष को देखना ठीक नहीं माना गया है जबकि बदसूरत या किसी अपंग व्यक्ति को देखना, रुके हुए कार्य में सफलता का सूचक होता है।
- किसी की शवयात्रा अथवा श्मशान में अंत्येष्टि क्रिया को देखना, परिवार में जल्दी ही मांगलिक कार्यों तथा आर्थिक लाभ का परिचायक है।
- मनुष्य अगर स्वप्न में वर्जिश करता हुआ दिखाई दे तो ऐसा व्यक्ति शीघ्र ही किसी रोग का शिकार हो जाता है।
- सपने में अगर आप खुद को आकाश में विचरण करते हुए दिखाई दें तो परिवार में किसी सदस्य की मानहानि की सूचना देता है। लेकिन खुद का धरती पर घूमना शीघ्र ही रोजगार प्राप्ति में सहायक होता है।
- स्वप्न में ज्योतिषी के पास जाना अथवा ज्योतिष से संबंधित कोई भी कार्य करना संतान को किसी-न-किसी रूप में कष्ट में डालता है।
- नींद में स्वयं को झाड़ू लगाते हुए देखना धन हानि या चोरी की सूचना देता है।
- स्वप्न में स्वयं को बारिश में भीगते हुए देखना हर तरह की व्याधि और संकट से मुक्ति का संकेत देता है।
- स्वप्न में बैंड या शहनाई का बजते हुए देखना दु:खद स्थितियों के आगमन का संकेत देता है।
- नींद में रोटी का खाना स्वयं के बीमार पड़ने का संकेत देता है, वहीं गरीब लोगों को रोटी का बाँटना आर्थिक स्थिति में वृद्धि करता है।
- सोते हुए विवाह का सेहरा पहनते हुए देखना पारिवारिक और विवाहित जीवन में अलगाव तथा झगड़े का संकेत देता है।
- आईने में अपना अक्स देखना अचल धन-संपत्ति प्राप्ति का संकेत देता है।
- स्वयं को स्वप्न में जूते-चप्पलों से पिटते हुए देखना शीघ्र ही व्यक्ति के मान-सम्मान में वृद्धि करता है। लेकिन किसी दूसरे को जूते से पीटना धन हानि और मान हानि की ओर संकेत करते हैं।